एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

2— ''मुरक्कब'' नहीं (यौगिक नहीं):— यौगिक उसे कहते हैं जो दो या दो से अधिक अंशों से मिलकर बने। जैसे मनुष्य का शरीर हाथ, पांव, आँख, नाक, कान से मिलकर बना और वह स्वतः काया और प्राण से यौगिक है। यादि अल्लाह भी यौगिक होगा तो वह भी अपने अस्तित्व में अपने अंशों का मुहताज होगा और जो ख़ुद वजूद में मुहताज होगा वह ख़ुदा नहीं हो सकता।

3— ''मुतहैयिज़'' नहीं:— मुतहैयिज़ उसे कहते हैं जो किसी जगह में हो। उदाहरण के लिए मनुष्य पृथ्वी पर है हवा उसको घेरे हुए है। पृथ्वी उस वातावरण में है जो उसके चारों ओर है और सितारे अंतरिक्ष में हैं। किसी हैयिज़ या पात्र में वही वस्तु होती है जो शरीर रखती हो अगर ईश्वर साकार होता तो यौगिक हो जाता और यौगिक हो जाता तो मुहताज हो जाता।

4— हुलूल (अतः प्रवेशन) ठीक नहीं:— हुलूल कहते हैं किसी चीज़ का किसी पात्र में इस तरह समा जाना कि जिसमें समाए उसके आकार में सम्वृद्धि न हो जैसे प्राण शरीर में समाता है। हुलूल का मतलब है उस चीज़ में सीमित हो जाना जिसमें हुलूल करे। अल्लाह यदि सीमित हो गया तो उसकी असमर्थता का कारण बन जाएगी।

5— ''महल–ए–हवादिस नहीं'':— जिस प्रकार सृष्टि की सभी चीज़ें घटनाओं से प्रभावित होती हैं। कम से कम काल पात्र के प्रभावी होने को नकारा नहीं जा सकता। मनुष्य बच्चे से जवान होता है और जवान से बूढ़ा, स्वस्थ रहता है और कभी बीमार हो जाता है। इसी प्रकार यदि अल्लाह को ''महल–ए–हवादिस'' मान लिया जाए तो चूँकि प्रभावी सबल और प्रभावित दुर्बल माना जाएगा। और अल्लाह की शक्ति को भी सीमित मानना पड़ेगा और किसी को उससे सबलतम मानना होगा।

दूसरे यह बात भी है कि परिवर्तित होना विनाश योग्य होने की ओर संकेत करता है। क्योंकि परिवर्तित के मानी हैं किसी न किसी हैसियत से नष्ट हो जाना। बचपन नष्ट हुआ जवानी आयी। जवानी नष्ट हुई बुढ़ापा आया यदि ईश्वर परिवर्तनशील होगा तो उसे विनाश योग्य मानना होगा। जबकि वह ''क़दीम'' है सर्वकालिक है। यह कहना कि परिवर्तन हस्ती में नहीं गुणों या विशेषताओं में होता है वहाँ ठीक हो सकता है जहाँ 'ज़ात और सिफ़ात'' अर्थात हस्ती और गुण अलग–अलग हों। लेकिन जहाँ दोनों एक हों वहाँ सिफ़त या गुण में बदलाव का मतलब होगा ज़ात या हस्ती में बदलाव।

6— ''मरई'' नहीं:— अल्लाह को देखना सम्भव नहीं। कुर्आन मजीद में है कि ''उसको आँख नहीं देख सकती।'' अपनी उम्मत (पंथ) द्वारा विवश किये जाने पर जनाबे मूसा (अ0) ने दुआ की, (हे मालिक) ''मुझे अपना दर्शन करा दे।'' जवाब मिला, (ए मूसा) ''तुम मुझे कदापि न देखोगे।''

कुछ लोगो का यह विचार है कि अल्लाह क़यामत में ईमान लाने वालों को अपना जलवा दिखाएगा। यह विचार अगर ठीक होता तो क़ुर्आन इतनी ताकीद के साथ नकारता नहीं। देखी वही चीज़ जा सकती है जो किसी दिशा में हो। दिशा में वही वस्तु होती है जो साकार हो। यदि ईश्वर साकाल होता तो देखा भी जाता।

देखना केवल रंग का सम्भव है। रंग क्या है! प्रकाश की वह तरंग जो किसी शरीर से परिवर्तित होकर पलटे। जिसको उस शरीर ने अपने में समो न लिया हो। क्या अल्लाह के लिए यह कल्पना सही हो सकती है! क्या वह कोई आकार है जो प्रकाश की कुछ लहरों को समो लेता है कुछ को पलटा देता है। यदि यह सही नहीं तो उसका देखा जाना भी सम्भव नहीं। उसको वाह्य नेत्रों से नहीं अतः नेत्रों से देखा जा सकता है। उसको चेहरे की आँखों से नहीं हृदय की आँखों से देखना सम्भव है। वह ख़ुद नहीं उसकी शक्ति और सामर्थ्य के जलवे दिखाई देते हैं।

हर सू तेरी क़ुदरत के हैं लाखों जलवे।
हैराँ हूँ कि दो आँखों से क्या–क्या देखूँ।।

(मीर अनीस)

7– ''मुहताज'' नहीं:– मुहताज होने का अर्थ है किसी सम्पूर्ण गुण का लुप्त होना और उसकी उपलब्धि की प्रतीक्षा करना और यह सूरत ख़ुदा के लिए सम्भव नहीं। क्योंकि वह अस्तित्व ही अस्तित्व है। उसके लिए अनस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसके अलावा यदि कोई सम्पूर्ण गुण बाद में प्राप्त हो तो परिवर्तन अनिवार्य ठहरेगा और अल्लाह महल–ए–हवादिस हो जाएगा। जिसकी रद्द पहले ही की जा चुकी है।

8– सिफ़ाते ज़ाएद नहीं:– अल्लाह की विशेषताओं या गुणों के विषय में एक दृष्टिकोण तो यह है कि चूँकि गुण ज़ात अथवा हस्ती से अलग चीज़ है। अगर अल्लाह के लिए गुण मान लिये गए तो बहुत क़दीम या अनादि मानने पड़ेंगे और क़दीम अथवा अनादि एक ही है। इसलिए अल्लाह का सगुण मानना सही नहीं।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि सभी आकाशीय ग्रंथों, पैग़म्बरों और क़ुर्आन ने अल्लाह के जो गुण गिनाये हैं कि ज्ञाता है, शक्तिमान है तो इसका अर्थ क्या हुआ, तो उन लोगों ने कहा कि ज्ञाता का अर्थ है अज्ञानी नहीं, शक्तिमान का अर्थ है विवश नहीं अर्थात तमाम सिफ़ाते सुबूतिया का हासिल सिफाते सलबिया है।

कुछ लोगों ने कहा अल्लाह उसी तरह ज्ञाता है जैसे हम, उसी तरह शक्तिमान है जैसे हम, यानी उसके गुणों की भी वही स्थिति है जो हमारे गुणों की है। हमारी ज़ात और सिफात अलग–अलग हैं। उसी तरह अल्लाह की ज़ात और सिफात अलग–अलग है और यह सिफतें अल्लाह की ज़ात में स्थापित हैं। परन्तु शीओं का मार्ग इसके बीच का है। एक तो इससे अनिवार्य हो जाता है कि अल्लाह की ज़ात गुण रहित हो, दूसरे इसका कोई मतलब ही नहीं कि ज्ञाता है न कहो बल्कि यह कहो कि अज्ञानी नहीं। ज्ञाता और अज्ञानी के बीच कोई चीज़ नहीं। ''जाहिल नहीं'' का मतलब सिवाय इसके कि आलिम है और क्या हो सकता है! और अगर सिफ़ात ज़ात से अलग हों तो अनेक क़दीम मानने पड़ेंगे। बल्कि चूँकि ईश्वर के गुण असंख्य हैं इसलिए असंख्य क़दीम भी मानना पड़ेंगे।

(जारी)